>

Title: Flood situation in Araria Parliamentary Constituency and other parts of Bihar.

श्री प्रदीप कुमार सिंह (अररिया): सभापति महोदय, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे इस लोक महत्व के विषय पर बोलने का अवसर प्रदान किया। महोदय, ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है कि कोई सांसद बाढ़ के विषय में पहली बार बोला हो। इससे पहले भी बिहार समेत देश के विभिन्न राज्यों के सांसद इस गम्भीर मुद्दे पर बाढ़ से बचाव हेतु कई बार संसद के पटल पर बोल चुके हैं। लेकिन आज तक केन्द्रीय सरकार इस गम्भीर विषय पर कोई ठोस रणनीति नहीं बना पाई है। जिस कारण आज लाखों लोग बाढ़ की विभीषिका में जीते और मरते हैं।

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि मेरे संसदीय क्षेत्र अररिया में 17 जुलाई को भीषण बाढ़ आई थी। ऐसी बाढ़ पहले 1987 में आई थी। नेपाल में लगातर बारिश की वजह से वहां से आने वाली कोसी नदी का कुसा बांध टूटने से अररिया, मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज तो बर्बाद ही हो गए। आपने पहले भी इस तरह की बात सुनी होगी। अररिया में कुरसाकाटा, नरपतगंज, सिक्टी का इलाका, बकरा नदी, परवान नदी और कनकई नदी, सुरसर नदी में इतना पानी आया कि वहां के इलाके की पूरी फसल बर्बाद हो गई। किसान धान की फसल रोप चुका था, लेकिन इस बाढ़ से वहां के किसान की कमर टूट गई है और अब वह दोबारा वह फसल रोपने के लायक नहीं है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि भारत सरकार इसके लिए कोई ठोस रणनीति बनाए। नदियों के तटबंधों का प्रावधान करे, ताकि बाढ़ से बचाव के लिए इलाके में किसानों की फसल बचे और जो इंफ्रास्ट्रक्चर, रोड, पुल आदि बने हैं, वे भी डैमेज हो गए हैं। कई सड़कें तो प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत बनी थीं। हम लोग पांच साल विकास का काम करते हैं, लेकिन एक दिन जो बाढ़ आती है वह पूरा विकास का काम अपने साथ बहा ले जाती है और वहां तबाही मचा जाती है। इसलिए बकरा नदी से जो कि पहाड़ी नदी है, यह और दूसरी जो कोसी की सहायक नदियां हैं, उनमें इतना पानी आता है कि अचानक घरों में पानी घुस जाता है। इससे किसान रोता है, खाने के लिए मरता है। मैं केन्द्रीय सरकार से कहूंगा कि एक केन्द्रीय समिति बनाई जाए जो इसकी जांच करे। बाढ़ से बचाव के लिए वहां बाढ़ सुरक्षा बांध बनाए जाएं। इसके अलावा केन्द्र सरकार बिहार सरकार को एक पैकेज दे ताकि बाढ़ और सुखाड़ से वहां की जनता को राहत मिल सके।